

मराठी यात्रावर्णन में डॉ. आनंद पाटील का योगदान

डॉ. दिलीपकुमार रा. गुंजरगे

हिंदी विभाग,

जयक्रांती कला वरिष्ठ महाविद्यालय, लातूर

E-mail id — drgunjarge1@gmail.com

२

००७ के वसुधा पत्रिका के अंक में एक लेख प्रकाशित

हुआ था। उस लेख का शीर्षक था "सैर कर दुनिया की गाफिल। इस लेख में अरूण प्रकाश ने कहा था, यूँ तो संसार के सभी देशों में विशेषकर भारत में यात्रा की अवधारणा तीर्थयात्रा और व्यापक अर्थ में अध्यात्मिकता के साथ जुड़ी है। हमारे यहाँ माना जाता है कि तीर्थ मुक्ति और मोक्ष देता है। उसके वास्तविक अर्थ को कौन जाने पर इतना तो निश्चित है कि तीर्थयात्रा पर निकलनेवाला सामान्य गृहस्थ उतनी देर के लिए रोजमर्रा के जीवन की समस्याओं से मुक्त हो कर आत्म जगत में विचरण करता है। कहा जाता है कि, शंकराचार्य ने धामों की स्थापना लोगों को मामुली जीवन की व्यथाओं और चिंताओं से मुक्त कर पर्यटक बनाने के महत् उद्देश्य से की थी। बात सोला आने सच भी हो तीर्थ, धाम, हज के बहाने, देश के चार कोने नापने का मौका जरूर मिल सकता है। धर्म में वास्तविक आस्था अनिवार्य नहीं है, यात्रा की चाह काफी है, आप चाहे तीर्थ पर जाए, पहाड़ की चोटी पर चढ़े या गोष्ठी सम्मलेनों के बहाने सांस्कृतिक धुमक्कड़ी करें उसे यात्रा ही कहा जायेगा। यात्रा का वृत्तांत लिखते हुए चाहे आप उसमें इतिहास को समेटे या मौजूदा संस्कृति, प्रकृति के वैभव यानी त्यौहार को सभी में यात्रा से उत्प्रेरित कथ्य की अभिव्यक्ति ही होगी। यानी आप यात्रा का साहित्य रचेंगे।

हिंदी साहित्य में कथा और काव्य को लेकर काफी लिखा जा चुका है। चरित्रगत अध्ययन एवं वैचारिक लेखन की दृष्टि से निबंध, आत्मकथा, संस्मरण एवं यात्रावर्णन आदि विधाएँ महत्वपूर्ण होते हुए भी उन पर बहुत कम लिखा गया है। वैसे देखा जाय तो यात्रा और मनुष्य की मूलभूत क्रियाओं से एक है। मानव की विभिन्न संस्कृतियों के उत्थान और पतन का मूल यात्रा है। शास्त्रों में ज्ञानप्राप्ति के लिए यात्रा के अत्याधिक महत्वपूर्ण माना है। देश-विदेश का बदलना

परिवेश और प्रकृति के विविध रूपों का दर्शन कराना अपने आप में एक अनूठा अनुभव है। यात्रा से ही प्रकृति की नाना रंग गंधमयी छबी का दर्शन होता है। मानव का विकास भी यात्रा से संबंधित है। यात्रा मनुष्य के प्रगति का सेपान है यात्रा के कारण मनुष्य को बहुआयामी व्यक्तित्व तथा अनेक अनुभूतियों का गंभीर ज्ञान होता है। अपने जीवन की आवश्यकताओं के लिए तथा व्यापार-वाणिज्य के निमित्त मनुष्य आजीवन यात्रा करता रहता है। यात्रा के कारण ही मनुष्य के बौद्धिक विकास में तेजी आई है। मनुष्य के मन में सौंदर्य का बोध तो पहले से ही था, प्रकृति के परिवर्तित रूपों ने भी उसे प्रभावित किया। मनुष्य की आनंद और उल्लास को भावना पुष्ट होती गई। मनुष्य ने इसी यायावारी वृत्ति को साहित्यिक रूप प्रदान किया मनुष्य निरंतर अपनी अनुभूति का प्रकटीकरण चाहता है। "यात्रा वर्णन" इसी प्रकटकरण की तीव्र इच्छा का ही लिपिबद्ध रूप है। यात्रा को महत्ता प्रतिपादित करनेवालों में हिंदी के प्रसिद्ध धुमक्कड राहुल सांकृत्यायन का नाम महत्वपूर्ण है। इन्होंने इस संबंध में काफी लिखा है। उनके यथातो धुमक्कड 'जिज्ञासा' निबंध का शेर काफी प्रसिद्ध है-

"सैर कर दुनिया की गाफिल, जिंदगानी फिर कहाँ?
जिंदगानी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ?"

यात्रा मनुष्य की अपरिहार्य जरूरत है। यात्रा के दौरान व्यक्ति स्वयं देश काल जाति धर्म आदि की सीमाओं से ऊपर उठकर व्यापक हृदय और उदार दृष्टिकोण से जीवन जगत का साक्षात्कार करता है। एक ओर यात्रा बाह्य जगत के सत्यों से उसका परिचय कराती है, तो दूसरी ओर स्वयं को भी जानने समझने का अवसर प्रदान करती है। महादेवी वर्मा कहती है, हमारी संस्कृति में यात्राओं का विशेष महत्व है क्यों कि इसी विचित्रता भरी धरती में एक संस्कृति का प्रश्न यायावरी के साथ जुड़ा है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में यात्रा वर्णन उतना विकसित नहीं है जितनी अन्य विधाएँ हैं

यात्रावर्णन शास्त्रीय आधारपर भी उपेक्षित होती रही है। इस विधा का नाम तक अभी तय नहीं हो पाया है। कुछ इस विधा को यात्रा विवरण, कुछ यात्रावृत्त, कुछ यात्रावृत्तांत, कुछ यात्रिका, कुछ यात्रा वर्णन तो कुछ प्रवास वर्णन कहकर संबोधित करते हैं। खैर, यात्रा वर्णन का संबंध यात्रा से है जिसमें यात्रा का वृत्तांत नहीं होता बल्कि यात्रागत स्थलों के सौंदर्य, वहाँकी संस्कृति, प्रकृति और परिवेश तथा जनसंपर्क के आधार पर प्राप्त अनुभूतियों के संचयन से है। कुछ मिलाकर कहा जा सकता है कि यात्रागत अनुभवों और अनुभूतियोंकी साहित्यिक प्रस्तुति यात्रावर्णन कहलाती है।

हिंदी तथा मराठी आर्य परिवार की समृद्ध भाषाएँ हैं। दोनों का जन्म संस्कृत के गर्भ से हुआ है। दोनों की लिपि (देवनागरी) एक है। इसी कारण दोनों में काफी समानता दिखाई देती है। दोनों भाषाओं में विपुल मात्रा में साहित्य का सृजन हुआ है। मराठी में यात्रा साहित्य पर उतना नहीं लिखा गया जितना अन्य साहित्यिक विधा पर लिखा गया है। फिर भी मराठी भाषा में लिखा गया यात्रावर्णन काफी समृद्ध है। मराठी में यात्रा वृत्तांत लिखने वालों में डॉ. आनंद पाटील का नाम सर्वोपरि लिया जा सकता है। डॉ. आनंद पाटील अंग्रेजी के प्रोफेसर रहे हैं। उनका जन्म कोल्हापूर जनपद के एक गरीब अनपढ़ किसान परिवार में एक छोटेसे शितूर मलकापूर नामक कस्बे में हुआ है। उन्हें मराठी के ग्रामीण कथाकार के रूप में पहचाना जाता है। उन्होंने ग्रामीण लघु उपन्यास, कहानियाँ, तुलनात्मक साहित्य, समीक्षा तथा यात्रा वृत्तांत का सृजन किया है। उन्होंने विश्व स्तर पर होनेवाली अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में अंग्रेजी में अपने शोध निबंध की प्रस्तुति की है, डॉ. पाटील नई पीढ़ी के प्रमुख कथा लेखक हैं। उन्होंने १९९४ में यात्रावर्णन पर लिखा 'परदेशवारी' नामक ग्रंथ लिखा है। इस यात्रावर्णन पर लिखे ग्रंथ की समीक्षा करते हुए मराठी के ख्यातनाम ग्रामीण कथा लेखक प्राचार्य रा.र. बोराडे ने लिखा है- एक छोटे कस्बे के ग्रामीण अनपढ़ किसान परिवार के लड़के की आर्थिक स्थिति अच्छी न होते हुए भी वह केवल उत्कट इच्छा के बलबूते पर परदेश गमन (विदेशयात्रा) करता है। उसका यह काम हार कर घर बैठे हुए अन्य ग्रामीण विद्यार्थियों को निश्चित रूप से प्रेरणा देगा। उनका यह ग्रंथ 'परदेशवारी' प्रत्येक देशी मनुष्य को पढ़ने योग्य है। आठ साल के बाद उनके इस ग्रंथ को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में आधार ग्रंथ के रूप में स्थान मिला है। उनके इस ग्रंथ का

विश्वविद्यालयीन संस्करण प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था निकाल रही है। डॉ. पाटील ने पाटील की लंदनयात्रा (पाटलाची लंडनवारी) इस नये शीर्षक से यात्रावर्णन परक पुस्तक का पुनर्लेखन भी किया है। जिससे उसका स्तर काफी उँचा हो गया है। डॉ. पाटील ने यात्रा के दौरान जो अनुभव आये, उन अनुभव के आधार पर आत्मकथनात्मक एकपात्री प्रयोग 'पाटील आये लंदन से (पाटील आले लंडनहून) कार्यक्रम शुरू किया। उनके जीवन में बांग्लादेश, अमेरिका, चीन, सिंगापुर, नेपाल तथा यूरोप की यात्रा करने का योग कई बार आया। उनकी "परदेशी पाँच परिक्रमा नामक" यात्रावृत्तांत पर लिखी पुस्तक प्रकाशित हुई है। उन्होंने इस पुस्तक में यात्रा के दौरान आये अनुभवों के आधारपर आत्मकथन, नाटक, उपन्यास आदि वाङ्मय प्रकार के मिश्रण से एक नया रसायन तैयार किया है। उनके द्वारा किया गया यह वाङ्मयीन प्रकार काफी सराहनीय है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुए शेक्सपियर संगोष्ठी में उपस्थित रहने के लिए उन्हें लंदन जाना पड़ा। उनकी यह पहली विलायत यात्रा थी। इस यात्रा में उन्हें जो अच्छे बुरे अनुभव आये, उन्होंने उन समस्त अनुभवों को विस्तार से इस यात्रा वृत्तांतपरक पुस्तक में शब्दबद्ध किया है। डॉ. पाटील द्वारा यात्रावृत्तांत पर लिखे गए इस पुस्तक को पढ़ने के बाद इसे तीन भागों में विभाजित करके देखा जा सकता है- १) शेक्सपियर पर हुई अंतरराष्ट्रीय परिषद में उपस्थित रहने के लिए जो पूर्वतैयारी करनी पड़ी तब से लेकर प्रत्यक्ष परिषद की समाप्ति तक २) परिषद के पंद्रह बीस दिन की अवधि में ऑस्ट्रिया, डेन्मार्क, स्वीडन, इटली, फ्रान्स, ग्रीक, बेल्जियम, नेदरलैंड, जर्मनी तथा स्विट्ज़रलैंड की की गई यात्रा ३) लेखक पीएच.डी. के लिए अनुसंधान कर रहे थे। अनुसंधान का विषय था- पाश्चात्य नाटक पर अंग्रेजी का प्रभाव प्रबंध के लिए डाटा कलेक्शन करने के हेतु उन्होंने शेक्सपियर की मुलाकत लेने हेतु महिनाभर की गई यात्रा। इन तीन भागों में से दूसरा भाग अत्यंत मनोरंजक तथा सही अर्थों में यात्रावर्णन पर ही है।

डॉ. पाटील ने 'पाटील की लंदनयात्रा' (पाटलाची लंडनवारी) नामक ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ को पढ़ते समय समझ में आता है कि विदेश यात्रा करनेवाला यह आदमी अंतर्बाह्य पक्का देशी है। विदेश में भी वे सुट के अंदर बंडी पहनते हैं। इसके दो फायदे हैं। यह बंडी उन्हें ठंड से बचाती है, इतनाही

नहीं उनकी यह बंडी विदेशी चोरों को चकमा देती है। मराठी भाषा में यात्रावृत्तांत पर लिखे गए पुस्तकों की कोई कमी नहीं है। यात्रा वृत्तांत पर लिखी गई पुस्तकों में से अधिकांश पुस्तकें सुखवस्तु लोगों द्वारा लिखी गई हैं। जो देश हमने देखा है वहाँ की लोगो को हमने देखा वे हमें कैसे दिखाई दिए, कैसे लगे यह बताने तथा उनका वर्णन करना उतना सीमित हेतु इन यात्रावृत्तांतपरक पुस्तकों का होता है। परंतु डॉ. पाटील लंदन यात्रा तथा परदेशी पाँच परिक्रमा' पुस्तक एक कदम आगे है।

डॉ. आनंद पाटील ने २००३ में छह परिक्रमा 'सहा परिक्रमा' नामक यात्रावर्णनात्मक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक में केवल तीन यात्राओं का वर्णन है। उन्होंने चीन, हौलंड तथा बेंकाक की यात्रा की, उन्होंने इन तीन देशों की यात्रा का सीधा-साधा वर्णन किया है। पुस्तक के प्रथम भाग में यूरोप, अमेरिका, बांग्लादेश तथा नेपाल इन चार देशों के यात्रावर्णन का मिश्रण है। यह एक किया गया अलग प्रयोग है। इस अलग यात्रावर्णन की अलग से दखल लेनी होगी। डॉ. पाटील ने पाटील की परदेश यात्रा (पाटलाची परदेशवारी) नामक यात्रावृत्तांत लिखा, परंतु वह पाठकों तक पहुँच नहीं पाया। इसलिए उन्होंने अपने यात्रावर्णन के यात्रावृत्तकथन के कार्यक्रम शुरू किये। उन्होंने अपने यात्रावृत्तकथन के कार्यक्रम अलग-अलग महाविद्यालयमें प्रस्तुत किये।

उनके इस प्रस्तुतीकरण से 'पाटील आये लंदन' से नामक यात्रानुभवात्मक, आत्मकथनात्मक एकपात्री प्रयोग जीवसंहिता का जनम हुआ। ऐसी अलग-थलग जीवनसंहिता प्रथम भाग यानी छह परिक्रमा (सहा परिक्रमा) है। इस पुस्तक के यात्रा के दौरान जो अनुभव आये उन अनुभवों के कथनों का यह प्रयोग है डॉ. पाटील छह सात बार विदेश यात्रा पर गए हैं। उन्होंने जा विदेश की यात्रा कि है, वह मुख्य रूप से चर्चासत्रों में भाग लेने के उद्देश्य से की है। कुल मिलाकर

कहा जा सकता है कि, एक ही समय यात्रावर्णन तीन स्तरोंपर साकार होता है। भौगोलिक, नैसर्गिक तथा शैक्षणिक। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण दूसरे दो स्तर हैं। स्वयं की और आत्मपरीक्षण की भूमिका से देखना और सभी आसपास के सामाजिक, सांस्कृतिक विश्व की ओर मूल्ययुक्त निगाहसे देखना। इन त्रिस्तरीय अनुभवों के कारण यात्रावर्णन अधिक असरदार होता है। किसी भी यात्रावर्णन में लेखक का व्यक्तित्व किस तरह से प्रकट हुआ है। यही महत्व का होता है। कारण यात्रापरक लेखन आत्मचरित्रपरक लेखन से ही संबंधित होता है। मराठी यात्रावर्णन में डॉ. आनंद पाटीलका स्थान सर्वोपरि रहा है। वे ग्रामीण कथाकार, समीक्षक तथा तुलनात्मक अध्ययनकर्ता होते हुए भी उन्होंने यात्रा वर्णन इस नयी अविकसित विदा को। कसित करने में अपनी अहम भूमिका निभाई है।

संदर्भ ग्रंथ:-

- 1.डॉ. आनंद यादव -पाटलाची लंडनवारी, लोक वाडमय प्रकाशन 1993
- 2.डॉ. आनंद यादव - परदेशी सहा परिक्रमा, सुविधा प्रकाशन 2003
- 3.Dr.Anand Balwant Patil -In search of my Kolhapur through Travellers eyes: Amsela Associated Publishers
- 4.कोल्हे अनिता - डॉ. आनंद यादव यांचे आत्मचरित्रात्मक कादंबरी लेखन, डिंपल पब्लिकेशन, आनंदनगर, नवघर 2001
- 5.डॉ. रवींद्र ठाकूर - आनंदी यादव: व्यक्ती आणि वाडमय, मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पूणे, 1993